वेद पुरान पढ़ी, पंडित थियड़ा केतिरा
बिना ग्यान गुरूअ जे, विद्या अविद्या मंझि अड़ी,
विरले कंहिं गुरमुख, डि्ठो, वचन मांझि वड़ी,
तंहिंखे हथि चढ़ी, सामी लख सरूप जी.

सतगुरु के ज्ञान का महत्व समझाते हुए सामीजी कहते हैं कि इस संसार में कितने ही लोग वेद और पुराण ग्रंथ पढ़कर पंडित हो गये हैं। किन्तु ऐसे लोग गुरु के ज्ञान के अभाव में अविज्ञा/अज्ञान में ही फँस गये हैं। अर्थात् वे आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सके। संसार में ऐसा विरला गुरुमुखजन होगा, जिसने अपने सतगुरु के वचन/उपदेश का पालन कर अंतर्ज्ञान प्राप्त किया है और अंतर्यानी भगवान को देखा है।

व्यावहारिक दृष्टि से किसी वस्तु या विषय को मन और बुद्धि द्वारा समझना कि 'यह वस्तु यह है' ज्ञान है। इसी ज्ञान को पाने के लिए सारे संसार में होड़ लगी हुई है। ज्ञान का और एक प्रकार है। 'आध्यात्मिक ज्ञान' । यह अपने स्वरूप का ज्ञान है, इस आत्मज्ञान भी कहा जाता है। ज्ञान के दो अन्य प्रकार भी गिनाये गये हैं- परोक्षज्ञान और अपरोक्ष ज्ञान। सत्संगति से अथवा सुष्ठु शास्त्र सुनने से ब्रह्म/परमेश्वर का संशय रहित ज्ञान होना 'परोक्ष ज्ञान' है। 'यह सब ब्रह्म है' का बोध परोक्ष ज्ञान है। आत्मा का साक्षात् ब्रह्मरूप से संशय रहित ज्ञान 'अपरोक्ष' ज्ञान' है। इसमें यह आत्मज्ञान होता है कि 'मैं ही सच्चिदानंदरूप ब्रह्म हूँ।' आत्मज्ञान शुद्ध ज्ञान रूप होने के कारण वेदों में इसे 'स्वयंविद' कहा गया है।

महाकवि सामी जी का कहना है कि वेद-पुराण या अन्य नीतिशास्त्र आदि पढ़ने से मनुष्य पंडित तो बन सकते हैं किन्तु इससे वे अंतर्ज्ञानी या ब्रह्मज्ञानी नहीं बन सकते। शुद्ध स्वस्वरूप का ज्ञान होना अनिवार्य है। जब तक यह ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक जीवन अविद्या के अंधकार में भटकता ही रहेगा। आत्मज्ञान के अभाव में उसके साजुज्य मुक्ति भी नहीं मिल सकती । यह आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए जीव को गुरु की, मोक्ष-गुरु, सतगुरु की नितांत आवश्यकता है। वही उसका मार्गदर्शक बन कर उसे सत्यमार्ग दिखाता है। सतगुरु के ज्ञान/बोध द्वारा ही आत्मज्ञान हो सकता है। अर्थात् मात्र ग्रंथों का पठन पर्याप्त नहीं है।

पढ़ पढ़ के ज्ञानी भये, मिट्यो नहीं तन ताप।
राम नाम तोता रटें, कटे न बंधन पाप।।

■